दुर्गा आराधना

M/s RAJOURI INVESTMENT & SAVING CORP.
RAJOURI(J&K)
PH: 0091-1962-262221,262021 CELL : 0091-94191-89422

दुर्गा आराधना

卐 जय माता दी 卐

©PRINTMAN

सूची

क्र० सं०	विषय	पृष्ठ सं०
1.	सर्वकामना सिद्ध प्रार्थना	3
2.	सप्तश्लोकी दुर्गा	5
3.	श्री दुर्गा के 108 नाम	7
4.	दुर्गा स्तुति	11
5.	दुर्गा कवच	13
6.	अर्गला स्तोत्र	35
7.	कीलक स्तोत्र	43
8.	दुर्गा चालीसा	49
9.	विन्ध्येश्वरी चालीसा	61
10.	विन्ध्येश्वरी स्तोत्र	73
11.	आरती अम्बे जी की	74
12.	आरती विन्ध्येश्वरी जी की	75
13.	आरती दुर्गा जी की	76
14.	आरती वैष्णों देवी की	77
15.	आरती शाकुम्भरी देवी की	78
16.	आरती पार्वती देवी की	79
17.	आत्म निवेदन	80

सर्व कामना सिद्ध प्रार्थना

भगवती भगवान की भक्ति करो प्रवान तुम।
अम्बे कर दो अमर जिस पे हो जाओ मेहरबान तुम।
काली काल के पंजे से तुम ही बचाना आन कर।
गौरी गोदी में बिठाना अपना बालक जान कर।
चिन्तपूरणी चिन्ता मेरी दूर तुम करती रहो।
लक्ष्मी लाखों भण्डारे मेरे तुम भरती रहो।
नैना देवी नैनों की शक्ति को देना तुम बढ़ा।
वैष्णों माँ विषय विकारों से देना तुम बचा।
मंगला मंगल सदा करना भवन दरबार में।
चण्डिका चढ़ती रहे मेरी कला संसार में।
भद्रकाली भद्र पुरुषों से मिलना तुम सदा।
ज्वाला जलना ईर्षा वश यह मिटाना कर कृपा।
चामुण्डा तुम दास पे अपनी दया दृष्टि करो।
माता मान इज्जत व सुख सम्पत्ति से भण्डारे भरो।

॥ श्री गणेशाय नमः॥

श्री सप्तश्लोकी दुर्गा

ऊँ ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा ।
बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति ॥१॥
दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः ।
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
दारिद्र्यदुःखभयहारिणी का त्वदन्या ।
सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता ॥२॥
सर्वमङ्गलमङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥३॥
शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे।
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥४॥
सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते ।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते ॥५॥
रोगानशेषानपहंसि तुष्टा ।
रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान् ।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां ।
त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति ॥६॥
सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोकस्याखिलेश्वरी ।
एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम् ॥७॥

।। इति श्रीसप्तश्लोकी दुर्गा सम्पूर्णा।।

श्री दुर्गाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

(माँ दुर्गा के १०८ नाम)

शतनाम प्रवक्ष्यामि शृणुष्व कमलानने।
यस्य प्रसादमात्रेण दुर्गा प्रीता भवेत् सती॥ १ ॥
ऊँ सती साध्वी भवप्रीता भवानी भवमोचनी।
आर्या दुर्गा जया चाद्या त्रिनेत्रा शूलधारिणी॥ २ ॥
पिनाकधारिणी चित्रा चण्डघण्टा महातपाः।
मनो बुद्धिरहंकारा चित्तरूपा चिता चितिः॥ ३ ॥
सर्वमन्त्रमयी सत्ता सत्यानन्दस्वरूपिणी।
अनन्ता भाविनी भाव्या भव्याभव्या सदागतिः॥ ४ ॥
शाम्भवी देवमाता च चिन्ता रत्नप्रिया सदा।
सर्वविद्या दक्षकन्या दक्षयज्ञविनाशिनी॥ ५ ॥
अपर्णानेकवर्णा च पाटला पाटलावती।
पट्टाम्बरपरीधाना कलमञ्जीररञ्जिनी॥ ६ ॥
अमेयविक्रमा क्रूरा सुन्दरी सुरसुन्दरी।
वनदुर्गा च मातङ्गी मतङ्गमुनिपूजिता॥ ७ ॥
ब्राह्मी माहेश्वरी चैन्द्री कौमारी वैष्णवी तथा।
चामुण्डा चैव वाराही लक्ष्मीश्च पुरुषाकृतिः॥ ८ ॥

विमलोत्कर्षिणी ज्ञाना क्रिया नित्या च बुद्धिदा ।
बहुला बहुलप्रेमा सर्ववाहनवाहना ॥ ९ ॥
निशुम्भशुम्भहननी महिषासुरमर्दिनी ।
मधुकैटभहन्त्री च चण्डमुण्डविनाशिनी ॥१० ॥
सर्वासुरविनाशा च सर्वदानवघातिनी ।
सर्वशास्त्रमयी सत्या सर्वास्त्रधारिणी तथा ॥११ ॥
अनेकाशस्त्रहस्ता च अनेकास्त्रस्य धारिणी ।
कुमारी चैककन्या च कैशोरी युवती यतिः ॥१२ ॥
अप्रौढा चैव प्रौढा च वृद्धमाता बलप्रदा ।
महोदरी मुक्तकेशी घोररूपा महाबला ॥१३ ॥
अग्निज्वाला रौद्रमुखी कालरात्रिस्तपस्विनी ।
नारायणी भद्रकाली विष्णुमाया जलोदरी ॥१४ ॥
शिवदूती कराली च अनन्ता परमेश्वरी ।
कात्यायनी च सावित्री प्रत्यक्षा ब्रह्मवादिनी ॥१५ ॥
य इदं प्रपठेन्नित्यं दुर्गानामशताष्टकम ।
नासाध्यं विद्यते देवि त्रिषु लोकेषु पार्वति ॥१६ ॥
धनं धान्यं सुतं जायां हयं हस्तिनमेव च ।
चतुर्वर्गं तथा चान्ते लभेन्मुक्तिं च शाश्वतीम् ॥१७ ॥

कुमारीं पूजयित्वा तु ध्यात्वा देवीं सुरेश्वरीम ।
पूजयेत् परया भक्तया पठेन्नामशताष्टकम ॥१८॥
तस्य सिद्धिर्भवेद् देवि सर्वैः सुरवरैरपि ।
राजानो दासतां यान्ति राज्यश्रियमवाप्नुयात ॥१९॥
गोरोचनालक्तककुङ्कुमेन सिन्दूरकर्पूमधुत्रयेण ।
विलख्य यन्त्रंविधिना विधिज्ञो भवेत् सदा धारयते पुरारिः ॥२०॥
भौमावास्यानिशामग्रे चन्द्रे शतभिषां गते ।
विलिख्य प्रपठेत् स्तोत्रं स भवेत् सम्पदां पदम् ॥२१॥

॥ इति श्रीविश्वसारतन्त्रे
दुर्गाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं समाप्तम्॥

(जो व्यक्ति प्रतिदिन दुर्गाजी के इन एक सौ आठ नामों का स्मरण करता है, उसके लिए तीनों लोकों में कुछ भी असाध्य नहीं है। वह धन, धान्य, पुत्र, स्त्री,घोड़ा, हाथी, धर्म आदि चार पुरुषार्थ तथा अन्त में सनातन मुक्ति भी प्राप्त कर लेता है)

॥जय माता की॥

श्री दुर्गा स्तुति

जय जय त्रिभुवन वन्दिनी, गिरि नन्दिनी हे, गिरि नन्दिनी हे।
असुर निकन्दिनी मातु, जय जय जय शम्भु प्रिये।।
त्रिभुवन शक्ति निज धारिणी, शुभ कारिणी हे, शुभ कारिणी हे।
भक्त उबाकर मातु,जय जय शम्भु प्रिये।।
असुर संहारिणी, सुरतारिणी हे, सुरतारिणी हे।
महिष विदारिनि मातु, जय जय शम्भु प्रिये।।
धुम्र विलोचन मोचिनि, त्रयलोचिनि, हे त्रयलोचिनी हे।
दुःखः विमोचन मातु, जय जय जय शम्भु प्रिये।।
चण्ड-मुण्ड भट मर्दिनी, सुविलासिनि हे, सुविलासिनि हे।
मन्द हंसानि सूर मातु, जय जय शम्भु प्रिये।।
रक्त बीज संहारिणी, भयनाशिनि हे भयनाशिनी हे।
भूधार वासिनि मातु, जय जय शम्भु प्रिये।।
शुम्भ-निःशुम्भ विभंजनि, रिपु गंजनि हे, रिपु गंजनि हे।
शिव मन रंजन मातु, जय जय शम्भु प्रिये।।
धारनी धर वरदायिनी, वरदायिनी हे वरदायिनी हे।
मृग रिपु वाहन मातु, जय जय शम्भु प्रिये।।
भूल चूक सब कर क्षमा, करुणामयी हे, करुणामयी हे।
मम शिर पर रख हाथ मातु, जय जय शम्भु प्रिये।।

श्री दुर्गा कवच

ऊँ अस्य श्री चण्डीकवचस्य ब्रह्मा ऋषिः अनुष्टुप् छन्द, चामुण्डा देवता, अंगन्यासोक्त मातरो बीजम्, दिग्बन्ध देवता स्तत्वम् श्रीजगदम्बा प्रीत्यर्थे सप्तशतीपाठागंत्वेन जपे विनियोगः।

ॐ यद्गुह्यं परमं लोके सर्वरक्षाकरं नृणाम्।
यन्न कस्यचिदाख्यातं तन्मे ब्रूहि पितामह॥

मार्कण्डेय जी ने कहा- हे पितामह! जो साधन संसार में अत्यन्त गोपनीय हैं, जिनसे मनुष्य मात्र की रक्षा होती है तथा आपने अब तक जिसे किसी से भी प्रकट नहीं किया है, वह साधन मुझे बताइए।

अस्ति गुह्यतमं विप्र! सर्वभूतोपकारकम्।
देव्यास्तु कवचं पुण्यं तच्छ्रृणुष्व महामुने॥

ब्रह्मा जी ने कहा- हे ब्रह्मन्! सम्पूर्ण प्राणियों का कल्याण करने वाला देवी का कवच अत्यन्त गोपनीय है, हे महामुनि! उसे सुनिए।

प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी।
तृतीयं चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम्॥

हे मुने! दुर्गा की नवशक्तियों-में पहली शक्ति का नाम शैलपुत्री (हिमालय कन्या पार्वती) है, दूसरी शक्ति का नाम ब्रह्मचारिणी (परब्रह्म परमात्मा को साक्षात् कराने वाली), तीसरी शक्ति चन्द्रघण्टा (चन्द्रमा जिसकी घण्टा में हो) चौथी शक्ति कूष्माण्डा (सारा संसार जिनके उदर में निवास करता हो) है।

पंचमं स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीति च।
सप्तमं कालरात्रीति महागौरिती चाष्टमम॥

पाँचवी शक्ति स्कन्दमाता (कार्तिकेय की जननी) है छठी शक्ति कात्यायनी (महर्षि कात्यायन के अप्रतिभ तेज से उत्पन्न होने वाली) है, सातवी शक्ति कालरात्रि (समस्त सृष्टि का संहार करने वाली) तथा आठवीं शक्ति महागौरी (शिव के महाकाली कहने पर क्रोध से जिन्होंने तपस्या कर ब्रह्मदेव से गौर वर्ण प्राप्त किया था) हैं।

नवमं सिद्धिदात्री च नवदुर्गाः प्रकीर्तिताः।
उक्तान्येतानि नामानि ब्रह्मणैव महात्मना॥

नवीं शक्ति सिद्धिदात्री (समस्त जगत को १ अणिमा, २ लघिमा, ३ प्राप्ति, ४ प्राकाम्य, ५ महिमा, ६ ईशित्व, ७ वशित्व, ८ कामावसायिता-इस आठ रूपों से सिद्धि देने वाली) है। ये नवदुर्गा कही गई हैं। ये शक्तियाँ सर्वज्ञ ब्रह्मदेव द्वारा कही गई हैं।

अग्निना दह्यमानस्तु शत्रुमध्ये गतो रणे।
विषमे दुर्गमे चैव भयार्ताः शरणं गताः॥

जो मनुष्य अग्नि में जल रहा हो, युद्ध भूमि में शत्रुओं से घिर गया हो, तथा अत्यन्त कठिन विपत्ति में फँस गया हो, वह यदि भगवती दुर्गा की शरण का सहारा ले ले।

न तेषां जायते किञ्चिदशुभं रणसंकटे।
नापदं तस्य पश्यामि शोक-दुःख-भयं न हि॥

तो उसका कभी युद्ध या संकट में कोई कुछ बिगाड़ नहीं सकता, उसे कोई विपत्ति घेर नही सकती और न उसे शोक दुःख तथा भय की प्राप्ति ही हो सकती है।

यैस्तु भक्त्या स्मृता नूनं तेषां वृद्धिः प्रजायते।
ये त्वां स्मरन्ति देवेशि रक्षसे तान्न संशयः॥

जो लोग भक्तिपूर्वक भगवती का स्मरण करते हैं, उनका अभ्युदय होता रहता है। हे भगवती! जो लोग तुम्हारा स्मरण करते हैं, निश्चय ही तुम उनकी रक्षा करती हो।

प्रेतसंस्था तु चामुण्डा वाराही महिषासना।
ऐन्द्री गजसमारूढ़ा वैष्णवी गरुड़ासना॥

प्रथम चामुण्डा देवी प्रेत के वाहन पर आरूढ़ रहती हैं, वाराही महिष के आसन पर रहती हैं, ऐन्द्री का वाहन ऐरावत हाथी है, वैष्णवी का वाहन गरुड़ है।

माहेश्वरी वृषारूढ़ा कौमारी शिखिवाहना।
लक्ष्मीः पद्मासना देवी पद्महस्ता हरिप्रिया॥

माहेश्वरी बैल के वाहन पर तथा कौमारी मोर के वाहन पर विराजमान हैं। भगवान विष्णु की प्रियतम लक्ष्मीदेवी कमल के आसन पर विराजमान हैं और हाथों में कमल धारण किये हैं।

श्वेतरूपधरा देवी ईश्वरी वृषवाहना।
ब्राह्मी हंससमारूढा सर्वाभरण भूषित॥

श्वेतवर्ण वाली ईश्वरी बैल पर सवार हैं, भगवती ब्रह्माणी (सरस्वती) सम्पूर्ण आभूषणों से युक्त हैं तथा वे हंस पर विराजमान रहती हैं।

इत्येता मातरः सर्वाः सर्वयोगसमन्विताः।
नानाभरण-शोभाढया नानारत्नोपशोभिताः॥

अनेक आभूषण तथा रत्नों से सुशोभित उपर्युक्त सभी माताएँ सभी योग शक्तियों से सम्पन्न हैं।

दृश्यन्ते रथमारूढा देव्यः क्रोधसमाकुलाः।
शङ्खंचक्रंगदां शक्तिं हलं च मुसलायुधम्॥

इनके अतिरिक्त और भी देवियाँ हैं, जो दैत्यों के विनाश के लिए तथा भक्तों की रक्षा के लिए क्रोधयुक्त होकर रथ पर बैठी दिखाई देती है और इनके हाथों में शंख, चक्र, गदा, शक्ति, हल, मूसल हैं।

खेटकं तोमर चैव परशुं पाशमेव च।
कुन्तायुधं त्रिशूलं च शार्ङ्गमायुधमुत्तमम्॥

खेटक, तोमर, परशु (फरसा), पाश (बाँधने वाला विशेष प्रकार का अस्त्र), भाला, त्रिशूल तथा उत्तम धनुष आदि अस्त्र विराजमान हैं।

दैत्यानां देहनाशाय भक्तानामभयाय च।
धारयन्त्यायुधानीत्थं देवानां च हिताय वै॥

जिनसे देवतओं की रक्षा होती है तथा देवी जिन्हें दैत्यों की देह नाश तथा भक्तों के मन से भय नाश के लिए धारण करती हैं।

नमस्तेऽस्तु महारौद्रे महाघोरपराक्रमे।
महाबले महोत्साहे महाभयविनाशिनि॥

महाभय का विनाश करने वाली, महान बल, माहघोर कर्म तथा महान् उत्साह से सुसम्पन्न हे महारौद्रे! (महारुद्र की शक्ति) तुम्हें नमस्कार है।

त्राहि मां देवि! दुष्प्रेक्ष्ये शत्रूणां भयवर्द्धिनि।
प्राच्यां रक्षतु मामैन्द्री आग्नेय्यामग्निदेवता॥

हे शत्रुओं का भय बढ़ाने वाली देवी! तुम मेरी रक्षा करो। दुर्घर्ष तेज के कारण मैं तुम्हारी ओर देख भी

नहीं सकता। ऐन्द्री शक्ति पूर्व दिशा में मेरी रक्षा करे तथा अग्नि देवता की आग्नेयीशक्ति अग्निकोण में हमारी रक्षा करे।

दक्षिणेऽवतु वाराही नैर्ऋत्यां खड्गधारिणी।
प्रतीच्यां वारुणी रक्षेद् वायव्यां मृगवाहिनी॥

वाराही शक्ति दक्षिण दिशा में, खड्गधारिणी नैर्ऋत्य कोण में, वारुणी शक्ति पश्चिम दिशा में तथा मृग के ऊपर सवार रहने वाली शक्ति वायव्य कोण में हमारी रक्षा करें।

उदीच्यां पातु कौमारी ईशान्यां शूलधारिणी।
उर्ध्व ब्रह्माणि मे रक्षेद धस्ताद् वैष्णवी तथा॥

भगवान कार्तिकेय की शक्ति कौमारी उत्तर दिशा में, शूल धारण करने वाली ईश्वरी शक्ति ईशान कोण में, ब्रह्माणी ऊपर तथा वैष्णवी शक्ति नीचे हमारी रक्षा करे।

एवं दश दिशो रक्षेच्चामुण्डा शववाहना।
जया मे चाग्रतः पातु विजया पातु पृष्ठतः॥

इसी प्रकार शव के ऊपर विराजमान चामुण्डा देवी दसों

दिशाओं में हमारी रक्षा करें। आगे जया, पीछे विजया हमारी रक्षा करें।

अजिता वामपार्श्वे तु दक्षिणे चापराजिता।
शिखामुद्योतिनी रक्षेदुमा मूर्ध्नि व्यवस्थिता॥

बायें भाग में अजिता, दाहिने भाग में अपराजिता, शिखा में उद्योतिनी तथा मस्तक की उमा, नियमपूर्वक हमारी रक्षा करें।

मालाधरी ललाटे च भ्रुवौ रक्षेद् यशस्विनी।
त्रिनेत्रा च भ्रुवोर्मध्ये यमघण्टा च नासिके॥

ललाट में मालाधरी, दोनों भ्रू में यशस्विनी, भ्रु के मध्य में त्रिनेत्रा तथा नासिका में यमघण्टा हमारी रक्षा करें।

शङ्खिनी चक्षुषोर्मध्ये श्रोत्रयोर्द्वारवासिनी।
कपोलो कालिका रक्षेत्कर्णमूले तु शांकरी॥

दोनों नेत्रों के बीच में शंखिनी, दोनों कानों के मध्य में द्वारवासिनी, कपोलों की कालिका, कर्ण के मूल भाग में शांकरी हमारी रक्षा करें।

नासिकायां सुगन्धा च उत्तरोष्ठे च चर्चिका।
अधरे चामृतकला जिह्वायां च सरस्वती॥

नासिका के बीच का भाग सुगन्धा, ओष्ठ में चर्चिका, अधर (ओठ) में अमृतकला तथा जिह्वा में सरस्वती, हमारी रक्षा करें।

दन्तान् रक्षतु कौमारी कण्ठमध्ये च चण्डिका।
घण्टिका चित्रघण्टा च महामाया च तालुके॥

कौमारी दाँतों की, चण्डिका कण्ठ-प्रदेश की, चित्रघण्टा गले की तथा महामाया तालु की रक्षा करें।

कामाक्षी चिबुकं रक्षेद् वाचं मे सर्वमंगला।
ग्रीवायां भद्रकाली च पृष्ठवंशे धनुर्धरी॥

कामाक्षी ठोढ़ी की, सर्वमंगला वाणी की, भद्रकाली ग्रीवा की तथा धनुष को धारण करने वाली रीढ़ प्रदेश की रक्षा करें।

नीलग्रीवा बहि:कण्ठे नलिकां नलकूबरी।
स्कन्धयो: खड्गिनी रक्षेद् बाहू मे वज्रधारिणी॥

कण्ठ से बाहर नीलग्रीवा और कण्ठ की नली में नलकूवरी, दोनों कन्धों की खड्गिनी तथा वज्र को धारण करने वाली दोनों बाहु की रक्षा करें।

हस्तयोर्दण्डिनी रक्षेदम्बिका चाऽगु लीषु च।
नखाञ्छूलेश्वरी रक्षेत् कुक्षौ रक्षेत् कुलेश्वरी॥

दोनों हाथ में दण्ड को धारण करने वाली तथा अम्बिका अंगुलियों में हमारी रक्षा करें। शूलेश्वरी नखों की तथा कुलेश्वरी कुक्षिप्रदेश में स्थित होकर हमारी रक्षा करें।

स्तनौ रक्षेन्महादेवी मनःशोक-विनाशिनी।
हृदये ललिता देवी उदरे शूलधारिणी॥

महादेवी दोनों स्तन की, शोक के नाश करने वाली मन की रक्षा करें। ललिता देवी हृदय में तथा शूलधारिणी उदर में स्थित होकर हमारी रक्षा करें।

नाभौ च कामिनी रक्षेद् गुह्यं गुह्येश्वरी तथा।
पूतना कामिका मेढ्रं गुदे महिषवाहिनी॥

नाभि में कामिनी तथा गुह्य भाग में गुह्येश्वरी हमारी

रक्षा करें। कामिका तथा पूतना लिंग की तथा महिषवाहिनी गुदा में हमारी रक्षा करें।

कटयां भगवती रक्षेज्जानुनी विन्ध्यवासिनी।
जंघे महाबला रक्षेत् सर्वकामप्रदायिनी॥

भगवती कटि प्रदेश में तथा विन्ध्यवासिनी घुटनों की रक्षा करें। सम्पूर्ण कामनाओं को प्रदान करने वाली महाबला देवी दोनों पिंडलियों की रक्षा करें।

गुल्फयोर्नारसिंही च पादपृष्ठे तु तैजसी।
पादाङ्गुलीषु श्री रक्षेत् पादाधस्तलवासिनी॥

नारसिंही दोनों पैर के घुट्टियों की, तेजस्वी देवी दोनों पैर के पिछले भाग की, श्रीदेवी पैर की अंगुलियों की तथा तलवासिनी पैर के निचले भाग की रक्षा करें।

नखान् दंष्ट्राकराली च केशांश्चैवोर्ध्वकेशिनी।
रोमकूपेषु कौमारी त्वचं वागीश्वरी तथा॥

दंष्ट्राकराली (अपनी दाढ़ों के कारण भयंकर दिखाई देने वाली) नखों की, ऊर्ध्वकेशिनी देवी केशों की, कावेरी (कुबेर की शक्ति) रोमावली के छिद्रों में तथा वागीश्वरी हमारी त्वचा (शरीर के ऊपरी भाग का चमड़ा) की रक्षा करें।

रक्त-मज्जा-वसा-मांसान्यस्थि-मेदांसि पार्वती।
अन्त्राणि कालरात्रिश्च पित्तं च मुकुटेश्वरी॥

पार्वती देवी रक्त, मज्जा, वसा, माँस, हड्डी और मेदे की रक्षा करें। कालरात्रि आंतो की तथा मुकुटेश्वरी पित्त की रक्षा करें।

पद्मावती पद्मकोशे कफे चूडामणिस्तथा।
ज्वालामुखी नखज्वालामभेद्या सर्वसन्धिषु॥

पद्मावती (मूलाधार में स्थित) सहस्त्र दल कमल में, चूड़ामणि कफ में, ज्वालामुखी नखराशि में उत्पन्न तेज की तथा अभेद्या (जिसका किसी शस्त्र से भेदन न हो) सभी सन्धियों (जोड़ों) में हमारी रक्षा करें।

शुक्रं ब्रह्माणिमे रक्षेच्छायां छत्रेश्वरी तथा।
अहंकारं मनो बुद्धिं रक्षेन् मे धर्मधारिणी॥

ब्रह्माणी शुक्र की, छत्रेश्वरी छाया की, धर्मधारिणी देवी हमारे अहंकार, मन तथा बुद्धि की रक्षा करें।

प्राणापानौ तथा व्यानमुदानं च समानकम्।
वज्रहस्ता च मे रक्षेत् प्राणंकल्याणं शोभना॥

वज्रहस्ता देवी (वज्र को धारण करने वाली) प्राण, अपान,

व्यान, उदान तथा समान वायु की, कल्याण से सुशोभित होने वाली कल्याणशोभना हमारे प्राणों की रक्षा करें।

रसे रूपे च गन्धे च शब्दे स्पर्शे च योगिनी।
सत्त्वं रजस्तमश्चैव रक्षेन्नारायणी सदा॥

रस, रूप, गन्ध, शब्द तथा स्पर्श रूप विषयों का अनुभव करते समय योगिनी तथा हमारे सत्व, रज एवं तमोगुणों की रक्षा नारायणी देवी करें।

आयू रक्षतु वाराही धर्मं रक्षतु वैष्णवी।
यशः कीर्तिं च लक्ष्मीं च धनं विद्यां च चक्रिणी॥

वाराही आयु की, वैष्णवी धर्म की, चक्रिणी (चक्र को धारण करने वाली) यश, कीर्ति, लक्ष्मी, धन तथा विद्या की रक्षा करें।

गोत्रमिन्द्राणि मे रक्षेत् पशून्मे रक्ष चण्डिके।
पुत्रान् रक्षेन्महालक्ष्मीर्भार्यां रक्षतु भैरवी॥

हे इंद्राणी, तुम मेरे गोत्र की तथा हे चण्डिके तुम मेरे पशुओं की रक्षा करो। महालक्ष्मी पुत्रों की तथा भैरवी देवी हमारी स्त्री की रक्षा करें।

पन्थानं सुपथा रक्षेन्मार्ग क्षेमकरी तथा।
राजद्वारे महालक्ष्मीर्विजया सर्वतः स्थिता॥

सुपथा (प्रशस्त मार्ग पर चलने वाली) मेरे पथ की, क्षेमकरी (कल्याण करने वाली) मार्ग की रक्षा करें। राजा के दरबार पर महालक्ष्मी तथा सब ओर व्याप्त रहने वाली विजया देवी भयों से हमारी रक्षा करें।

रक्षाहीनं तु यत् स्थानं वर्जितं कवचेन तु।
तत्सर्वं रक्ष मे देवि जयन्ती पापनाशिनी॥

हे देवि! इस कवच में जिस स्थान की रक्षा नहीं कही गई है उस अरक्षित स्थान में (तुम्हारी शक्ति) पाप को नाश करने वाली जयन्ती देवी आप हमारी रक्षा करें।

पदमेकं न गच्छेत्तु यदीच्छेच्छुभमात्मनः।
कवचेनावृतो नित्यं यत्र यत्रैव गच्छति॥

यदि मनुष्य अपना कल्याण चाहे तो कवच के पाठ के बिना एक पग भी कहीं यात्रा न करें। क्योंकि कवच का पाठ करके चलने वाला मनुष्य जिस-जिस स्थान पर जाता है।

तत्र तत्रार्थलाभश्च विजयः सार्वकामिकः।
यं यं चिन्तयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम्॥

उसे वहाँ-वहाँ धन का लाभ होता हे और सम्पूर्ण कामनाओं को सिद्ध करने वाली विजय की प्राप्ति होती है। वह पुरूष जिस-जिस अभीष्ट वस्तु को चाहता है वह वस्तु उसे निश्चय ही प्राप्त होती है।

परमैश्वर्यमतुलं प्राप्यते भूतले पुमान्।
निर्भयो जायते मर्त्यः सङ्ग्रामेष्वपराजित॥

कवच का पाठ करने वाला इस पृथ्वी पर अतुल ऐश्वर्य प्राप्त करता है। वह किसी से नहीं डरता और युद्ध में उसे कोई हरा भी नहीं सकता।

त्रैलोक्ये तु भवेत् पूज्यः कवचेनावृतः पुमान्।
इदं तु देव्याः कवचं देवानामपि दुर्लभम्॥

तीनों लोकों में उसकी पूजा होती है। यह देवी का कवच देवताओं के लिए भी दुर्लभ हैं।

यः पठेत् प्रयतो नित्यं त्रिसंध्यं श्रद्धयाऽन्वितः।
दैवीकला भवेत्तस्य त्रैलोक्येष्वराजितः॥

जो लोग तीनों संध्या में श्रद्धापूर्वक इस कवच का पाठ करते हैं उन्हें देवीकला की प्राप्ति होती है। तीनों लोकों में उन्हें कोई जीत नहीं सकता।

जीवेद् वर्षशतं साग्रमपमृत्युविवर्जितः।
नश्यन्ति व्याधयः सर्वे लूता-विस्फोटकादयः॥

उस पुरूष की अपमृत्यु नहीं होती। वह सौ से अधिक वर्ष तक जीवित रहता है। इस कवच का पाठ करने से लूता (सिर में होने वाला खाज की रोग मकरी), विस्फोटक (चेचक) आदि सभी नष्ट हो जाते हैं।

स्थावरं जङ्गमं चैव कृत्रिम चाऽपि यद्विषम्।
अभिचाराणि सर्वाणि मन्त्र-यन्त्राणि भूतले॥

स्थावर विष (कनेर, भाँग, अफीम में रहने वाला), जंगम विष (साँप, बिच्छु आदि से उत्पन्न), कृत्रिम विष (अफीम, तेल आदि के संयोग से उत्पन्न) ये सभी प्रकार के विष नष्ट हो जाते हैं। मारण, मोहन तथा उच्चाटन आदि सभी प्रकार के किये गए अभिचार यन्त्र तथा मन्त्र, पृथ्वी तथा आकाश में विचरण करने वाले सभी

भूचराः खेचराश्चैव जलजाश्चोपदेशिकाः।
सहजा कुलजा माला डाकिनी-शाकिनी तथा॥

ग्रामदेवतादि, जल में उत्पन्न होने वाले तथा उपदेश से सिद्ध होने वाले सभी प्रकार के क्षुद्र देवता आदि कवच के पाठ करने वाले मनुष्य को देखते ही विनष्ट हो जाते हैं। जन्म के साथ उत्पन्न होने वाले ग्राम-देवता, कुलक्रम से उत्पन्न होने वाले कुल देवता, कण्ठ, कण्ठमाला, डाकिनी, शाकिनी

अन्तरिक्षचरा घोरा डाकिन्यश्च महाबलाः।
ग्रह-भूत पिशाचाश्च यक्ष गन्धर्व-राक्षसाः॥

अन्तरिक्ष में विचरण करने वाली अत्यन्त भयानक बलवान डाकिनियाँ, ग्रह, भूत पिशाच

ब्रह्म-राक्षस-वेताला: कूष्माण्डा भैरवादयः।
नश्यन्ति दर्शनातस्य कवचे हृदि संस्थिते॥

ब्रह्मराक्षस, बेताल, कूष्माण्ड तथा भयानक भैरव आदि सभी अनिष्ट करने वाले जीव, विशेष कवच का पाठ करने वाले पुरुष को देखते ही विनष्ट हो जाते हैं।

मानोन्नतिर्भवेद् राज्ञस्तेजोवृद्धिकरं परम्।
यशसा वर्धते सोऽपि कीर्तिमण्डितभूतले॥

कवचधारी पुरुष को राजा के द्वारा सम्मान की प्राप्ति होती है।कवच का पाठ करने वाला पुरुष इस पृथ्वी को अपनी कीर्ति से सुशोभीत करता है और अपनी कीर्ति के साथ वह नित्य अभ्युदय को प्राप्त करता है।

जपेत् सप्तशतीं चण्डीं कृत्वा तु कवचं पुरा।
यावद् भूमण्डलं धत्ते-सशैल-वनकाननम्॥

जो कवच का पाठ कर सप्तशती का पाठ करता है, उसकी पुत्र-पौत्रादि संतति पृथ्वी पर तब तक विद्यमान रहती है जब तक पहाड़, वन, कानन और कानन से युक्त यह पृथ्वी टिकी हुई है।

तावत्तिष्ठति मेदिन्यां सन्ततिः पुत्र-पौत्रिकी।
देहान्ते परमं स्थानं यत्सुरैरपि दुर्लभम्॥
प्राप्नोति पुरुषो नित्यं महामायाप्रसादतः।
लभते परमं रूपं शिवेन सह मोदते॥

कवच का पाठ कर दुर्गा सप्तशती का पाठ करने वाला मनुष्य मरने के बाद महामाया की कृपा से देवताओं के लिए जो अत्यन्त दुर्लभ स्थान है। उसे प्राप्त कर लेता है और उत्तम रूप प्राप्त कर शिवजी के साथ आनन्द पूर्वक निवास करता है।

॥इति श्री दुर्गा कवच समाप्त॥

अथ अर्गलास्तोत्रम्

ॐ अस्य श्रीअर्गला स्तोत्रमन्त्रस्य
विष्णुर्ऋषिः, अनुष्टुप् छंदः,
श्रीमहालक्ष्मीर्देवता, श्रीजगदम्बाप्रीतयर्थे
सप्तशतीपाठांगत्वेन जपे विनियोगः॥

मार्कंडेयोवाच

जयंती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गाक्षमा शिवाधात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते॥१॥

हे जयंती, मंगला, काली, भद्रकाली, कपालिनी, दुर्गा, क्षमा, शिवा, धात्री, स्वाहा, स्वधा नामों वाली देवी मेरा आपको नमस्कार है।

जय त्वं देवी चामुंडे जय भूतार्तिहारिणि।
जय सर्वगते देवी कालरात्रि नमोऽस्तु ते ॥२॥
मधु कैटभ विद्रावि विधातृ वरदे नमः।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥३॥

हे देवी चामुंडे! आपकी जय हो! सम्पूर्ण प्राणियों के कष्टों को हरने वाली हे देवी! आपकी जय हो। सर्वत्र व्याप्त, सृष्टि का संहार करने वाली हे कालरात्रि आपकी जय हो। मधु और कैटभ नामक राक्षसों का विनाश करने वाली, ब्रह्माजी को भी वर देने वाली हे देवी! आपको नमस्कार है। हे देवी! आप मुझे रूप दो, जय दो, यश दो, और काम क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो।

महिषासुरनिर्णाशि भक्तानां सुखदे नमः।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥४॥
रक्तबीजवधे देवी चंडमुंडविनाशिनि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥५॥

महिषासुर दैत्य का वध करने वाली, रक्तबीज का बध और चण्ड मुण्ड का विनाश करने वाली! हे भक्तों की सुखदात्री देवी! आपको नमस्कार है। आप मुझे रूप दो, जय दो, यश दो और काम, क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो।

शुंभस्यैव निशुम्भस्य धूम्राक्षस्य च मर्दिनि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥६॥
वंदितांघ्रियुगे देवि सर्वसौभाग्यदायिनि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥७॥

शुंभ-निशुंभ व धूम्राक्ष राक्षसों का वध करने वाली हे देवी! आप मुझे रूप दो, जय दो, यश दो और मेरे शत्रुओं का नाश करो। वंदित चरणों वाली, संपूर्ण सौभाग्य प्रदात्री देवी! आप मुझे रूप दो, जय दो यश दो और मेरे शत्रुओं का नाश करो।

अचिंत्यरूपचरिते सर्वशत्रु विनाशिनि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥८॥
नतेभ्यः सर्वदा भक्त्या चंडिके दुरितापहे।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥९॥

चिंतन में न आने वाली रूप च चरित वाली, सभी शत्रुओं की विनाशक हे देवी! आप मुझे रूप दो, जय दो, यश दो, और मेरे शत्रुओं का नाश करो! हे पाप विनाशक चण्डिके! जो भक्त आपके चरणों में सदैव शीश झुकाते हैं उन्हें रूप दो, जय दो, यश दो और उनके शत्रुओं का नाश करो।

स्तुवद्भ्यो भक्तिपूर्वत्वां चंडिके व्याधि नाशिनि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥१०॥

चंडिके सततं ये त्वामर्चयंतीह भक्तितः।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥११॥

हे रोग विनाशक चंडिके! जो भक्त आपकी श्रद्धा से स्तुति करते हैं, उन्हें रूप दो, जय दो, यश दो और उनके शत्रुओं का नाश करो। हे चंडिके! जो भक्त आपका निष्ठापूर्वक पूजन करते हैं, उन्हें रूप दो, जय दो, यश दो और उनके शत्रुओं का नाश करो।

देहि सौभाग्यमारोग्यं देहि मे परमं सुखम्।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥१२॥
विधेहि द्विषतां नाशं विधेहि बलमुच्चकैः।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥१३॥

हे दुर्गा! आप मुझे सौभाग्य, आरोग्य व अनंत सुख दो। साथ ही रूप दो, जय दो, यश दो ओर मेरे शत्रुओं का नाश करो। हे देवी! मेरे शत्रुओं का नाश करो। और मुझे बल, रूप, जय, यश प्रदान कर मेरे शत्रुओं का नाश करो।

विधेहि देवी कल्याणं विधेहि परमां श्रियम्।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥१४॥

सुरासुर शिरोरत्न निघृष्ट चरणेऽम्बिके।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥१५॥

हे देवी दुर्गे! मेरा मंगल करो। मुझे परमश्री (ऐश्वर्य) प्रदान करो। साथ ही मुझे रूप दो, जय दो, यश दो और मेरे शत्रुओं का नाश करो। हे अंबिके! देवता- दानव सभी आपके चरणों में शीश झुकाते हैं। हे देव-अदेवों से वंदित देवी! मुझको रूप दो, जय दो, यश दो और मेरे शत्रुओं का नाश करो।

विद्यावंतं यशस्वंतं लक्ष्मीवंतं जनं कुरु।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥१६॥
प्रचंडदैत्यदर्पघ्ने चंडिके प्रणताय मे।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥१७॥

हे दुर्गे। आप अपने भक्तो को विद्वान, यशस्वी और लक्ष्मीवान बनाओ। हे देवी! मुझे रूप दो, जय दो, यश दो और मेरे शत्रुओं का नाश करो। प्रचण्ड दैत्यों के मान का मर्दन करने वाली हे चंडिके देवी! मुझ विनीत भक्त को रूप दो, जय दो, यश दो और मेरे शत्रुओं का नाश करो।

चतुर्भुजे चतुर्वक्त्र संस्तुते परमेश्वरी।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥१८॥
कृष्णेन संस्तुते देवी शाश्वत् भक्त्या सदांबिके।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥१९॥

चार भुजाधारिणी, ब्रह्माजी द्वारा स्तुत्य हे परमेश्वरी देवी! आप मुझे रूप दो, जय दो, यश दो, और मेरे शत्रुओं का नाश करो। कृष्ण द्वारा सदैव भक्तिपूर्वक वंदित व स्तुत्य हे अंबिका देवी! आप मुझे रूप दो, जय दो, यश दो और मेरे शत्रुओं का नाश करो।

हिमाचलसुतानाथ संस्तुते परमेश्वरि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥२०॥
इद्राणीपति सद्भाव पूजिते परमेश्वरि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥२१॥

हिमालय पुत्री पार्वती के पति शिव द्वारा स्तुत्य हे परमेश्वरि देवी! आप मुझे रूप दो, जय दो, यश दो और मेरे शत्रुओं का नाश करो। शचिपति इंद्र के द्वारा पूजित हे परमेश्वरि! आप मुझे रूप दो, जय दो, यश दो और मेरे शत्रुओं का नाश करो।

देवी प्रचंडदोर्दंड दैत्यदर्प विनाशिनि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥२२॥
देवी भक्तजनोद्दामदत्तानंदोदयेऽम्बिके।
रूपं देहि जय देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥२३॥

प्रचण्ड भुजदण्डोंवाले दैत्यों का घमंड चूर करने वाली हे दुर्गे! आप मुझे रूप दो, जय दो, यश दो और मेरे शत्रुओं का नाश करो। निज भक्तों के आनंद में नित्य वृद्धि करने वाली हे देवी! आप मुझे जय दो, यश दो और मेरे शुत्रओं का नाश करो।

पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम्।
तारिणीं दुर्गसंसार सागरस्य कुलोद्भवाम् ॥२४॥

हे देवी! मुझे मनोरमा व मेरे मन के अनूरूप चलने वाली, संसार-सागर को पार कराने वाली श्रेष्ठ कुल में जन्मी पत्नी प्रदान करो।

इदं स्तोत्रं पठित्वा तु महास्तोत्रं पठेन्नरः।
स तु सप्तशतीं संख्या वरमाप्नोति संपदाम् ॥२५॥

जो भक्त इस अर्गला स्तोत्र का पाठ करने के बाद दुर्गा सप्तशती का पाठ करता है उसे सर्वोत्तम फल की प्राप्ति होती है ओर वह संपत्तियुक्त होता है।

॥इति अर्गलास्तोत्रम् संपूर्णम्॥

अथ कीलक स्तोत्रम्

ॐ अस्य श्रीकीलक मन्त्रस्य शिव ऋषिः, अनुष्टुप छन्दः, श्री महासरस्वती देवता, श्रीजगदम्बा प्रीत्यर्थे सप्तशतीपाठांग जपे विनियोगः॥

विशुद्ध ज्ञानदेहाय त्रिवेदी दिव्य चक्षुषे।
श्रेयः प्राप्ति निमित्ताय नमः सोमार्द्धधारिणे॥१॥

हे देवी! पवित्र ज्ञानस्वरूप, तीन वेदरूपी नेत्रोंवाले, दूज के चंद्र को धारण करने वाले भगवान शिव को कल्याण की कामना से मैं नमन करता हूँ।

सर्वमेतद्विजानीयांमंत्राणामभिकीलकम्।
सोऽपि क्षेमम वाप्नोति सततं जाप्य तत्परः॥२॥

जो प्राणी नवार्ण मंत्र के कीलकों से परिचित है तथा जो नवार्ण मंत्र का जाप करता, है उसको भी सदैव शुभत्व की प्राप्ति होती है।

सिध्यंत्युच्चाटनादीनि वस्तूनि सकलान्यपि।
एतेन स्तुवतां देवी स्तोत्र मात्रेण सिध्यति॥३॥

जो प्राणी इस कीलक द्वारा देवी की स्तुति करता है वह उच्चाटनादि सभी क्रियाएं संपन्न कर लेता है तथा देवी की उस पर कृपा बनी रहती है।

न मंत्रो न औषधं तत्र न किंचित् अपि विद्यते।
विना जाप्येन सि यते सर्वमुच्चाटनादिकम्॥४॥
समग्राण्यपि सिद्धयेत लोकशंकामिमां हरः।
कृत्वा निमंत्रयामास सर्वमेवमिदं शुभम्॥५॥
स्तोत्रं वै चंडिकायास्तु तच्च गुप्तं चकार सः।
समाप्नोति सुपुण्येन तां यथावन्नियंत्रणाम्॥६॥

कीलक का पाठ करने वाले को मंत्र, औषधि आदि की कोई आवश्यकता नहीं रहती। उसके द्वारा उच्चाटनादि कर्म कीलक का पाठ करने मात्र से ही सिद्ध हो जाते हैं। सिद्धि प्राप्ति के बारे में लोगों के मन में शंका होने पर उसके निवारणार्थ भगवान शिव ने मंत्र व तंत्र को कील दिया। शिव ने चंडिका स्तोत्र (दुर्गा सप्तशती) का

उत्कीलन कर दिया। क्योंकि चंडिका स्तोत्र का पाठ करने वाले के पुण्य कभी क्षीण नहीं होते।

सोऽपि क्षेमम वाप्नोति सर्वमेव न संशय:।
कृष्णायां वा चतुर्दश्यामष्टम्यां वा समाहित: ॥७॥

जो श्रद्धालु कृष्णपक्ष की चतुर्दशी या अष्टमी को भक्तिपूर्वक दुर्गा सप्तशती का पाठ करता है उसका निश्चित की कल्याण होता है।

ददाति प्रतिगृह्णाति नान्यथेषा प्रसिद्धयति।
इत्थं रूपेण कीलेन महादेवेन कीलितम् ॥८॥

जो श्रद्धालु देवी को अपना संपूर्ण वैभव कृष्णपक्ष की चतुर्दशी-अष्टमी को समर्पित कर फिर उसका भोग करता है, उस पर देवी की कृपा बनी रहती है। उसी उद्देश्य से भगवान शिव ने चंडिका स्तोत्र (दुर्गा सप्तशती) के फल को भी कीलित किया है

यो निष्कीलां विधार्यनां नित्यं जपति संस्फुटम्।
स सिद्ध: स गण: सोऽपि गंधर्वो जायते नर: ॥९॥
न चेवाप्यटतस्तस्य भयं क्वापीह जायते।
न अपमृत्युवशं याति मृतो मोक्षं वाप्नुयात् ॥१०॥

जो श्रद्धालु कीलक-पाठ करने के बाद दुर्गा सप्तशती का पाठ करता है, वह सिद्ध हो जाता है, वही देवी का पार्षद व गंधर्व भी बनता है। वह कहीं भी विचरण करे उसे किसी भी प्रकार का भय नहीं रहता, न ही उसकी अकाल मृत्यु होती है। मरणोपरांत वह मोक्ष पाता है।

ज्ञात्वा प्रारभ्य कुर्वीत ह्यकुर्वाणो विनश्यति।
ततो ज्ञात्वेव संपन्नमिदं प्रारभ्यते बुधैः॥११॥

भावार्थः दुर्गा सप्तशती का पाठ करने से पहले कीलक को भली प्रकार जान लेना चाहिए। ऐसा न करने से विनाश होता है। इसलिए कीलक (फल का विघ्न) व निष्कीलन (फल के विघ्न का निवारण करने की प्रक्रिया) को समझकर ही दुर्गा सप्तशती का पाठ करना श्रेयस्कर रहता है।

सौभाग्यादि च यत् किंचित् दृश्यते ललनाजने।
तत्वर्सं त्वत्प्रसादेन तेन जाप्यमिदं शुभम्॥१२॥

ललनाओं में सौभाग्य, संतति, लक्ष्मी आदि जो कुछ परिलक्षित होता है वह देवी दुर्गा की कृपा का ही प्रतिफल है। अतः देवी की प्रसन्नतार्थ इस कीलक का पाठ निश्चय ही करना चाहिए।

शनैस्तु जप्यमानेऽस्मिन् स्तोत्रे संपत्तिरुच्चकैः।
भवत्येव समग्रापि ततः प्रारभ्यमेव तत्॥१३॥

इस कीलक का उच्च स्वर से पाठ करना चाहिए। ऐसा करने से विपुल वैभव प्राप्त होता है जबकि मंद स्वर से पाठ करने पर फलप्राप्ति अल्प प्रभाव में प्राप्त होती है।

ऐश्वर्यं यत्प्रसादेन सौभाग्यारोग्यसंपदः।
शत्रुहानिः परोमोक्षः स्तूयते सान किं जनैः॥१४॥

जिस देवी की कृपा से प्राणी को ऐश्वर्य, सौभाग्य, आरोग्य, संपदा की प्राप्ति होती है तथा शत्रुओं का नाश व मोक्ष की प्राप्ति होती है। ऐसी देवी की प्रत्येक प्राणी को भक्तिपूर्वक स्तुति करनी चाहिए।

॥इति कीलकम् संपूर्णम्॥

श्री दुर्गा चालीसा

नमो नमो दुर्गे सुख करनी।
नमो नमो अम्बे दु:खहरनी॥

सुख प्रदान करने वाली श्री दुर्गामाँ को नमस्कार है दु:खों का हरण करने वाली श्री अम्बा जी को नमस्कार है।

निरंकार है ज्योति तुम्हारी।
तिहूँ लोक फैली उजियारी॥

आपकी ज्योति का प्रकाश निराकार अर्थात् असीम है जिससे तीनों लोकों (पृथ्वी, आकाश, पाताल) में उजियाला फैल रहा है।

शशि ललाट मुख महाविशाला।
नेत्र लाल भृकुटी विकराला॥

आपका मस्तक चन्द्रमा के समान और मुख की शोभा अति विशाल है। आपके नयन लाल आभा से युक्त और भवें (भृकुटियां) विकराल रूप वाली हैं।

रूप मातु को अधिक सुहावे।
दरश करत जन अति सुख पावे॥

माता का यह रूप अत्यधिक सुहावना है इसके दर्शन करने से भक्तजनों को अत्यन्त सुख मिलता है।

तुम संसार शक्ति लय कीना।
पालन हेतु अन्न धन दीना॥

तुमने संसार की सभी शक्तियों को अपने में समेटा हुआ है और जगत का पालन करने के लिए अन्न और धन प्रदान किया है।

अन्नपूर्णा हुई जग पाला।
तुम ही आदि सुन्दरी बाला॥

अन्नपूर्णा का रूप धारण करके आप समस्त संसार का पालन कर रही हैं और आदि (प्राचीन) बालासुन्दरी का रूप भी आप ही हैं।

प्रलयकाल सब नाशन हारी।
तुम गौरी शिव शंकर प्यारी॥

प्रलयकाल में आप ही सब का नाश करने वाली हैं।
शिव शंकर की प्रिया गौरी-पार्वती भी आप ही हैं।

शिव योगी तुम्हरे गुण गावें।
ब्रह्मा विष्णु तुम्हें नित ध्यावें॥

शिव तथा योगीजन आपका गुणगान करते हैं और
ब्रह्मा-विष्णु देवता भी नित्य ही आपका ध्यान करते हैं।

रूप सरस्वती को तुम धारा।
दे सुबुद्धि ऋषि मुनिन उबारा॥

आपने ही श्री सरस्वती जी का रूप धारण करके
ऋषि-मुनियों को सद्‌बुद्धि प्रदान कर उनका उद्धार किया।

धरयो रूप नरसिंह को अम्बा।
परगट भई फाड़ कर खम्बा॥

हे अम्बा माता! आपने ही श्री नृसिंह अवतार का रूप
धारण किया और खम्बे में से प्रकट हुई थी।

रक्षा करि प्रहलाद बचायो।
हिरणाकुश को स्वर्ग पठायो॥

आपने प्रहलाद की भी रक्षा करी तथा हिरण्यकश्यप को भी स्वर्ग मिला क्योंकि वह आपके हाथों से मारा गया।

लक्ष्मी रूप धरो जग माहीं।
श्री नारायण अंग समाहीं॥

लक्ष्मी जी का रूप धारण करके आप ही जगत में श्री नारायण के संग में विराजमान हैं।

क्षीरसिन्धु में करत विलासा।
दयासिन्धु दीजै मन आसा॥

भगवान विष्णुजी के साथ में क्षीरसागर में विराजमान हे दयासिन्धु देवी! मेरी मन की आशाओं को पूर्ण करो।

हिंगलाज में तुम्हीं भवानी।
महिमा अमित न जात बखानी॥

हिंगलाज की प्रसिद्ध देवी भवानी भी आप ही हैं। आपकी अपार महिमा का बखान नहीं किया जा सकता।

मातंगी अरु धूमावति माता।
भुवनेश्वरी बगला सुखदाता॥

मातंगी देवी और धूमावती माता आप स्वयं ही हैं। भुवनेश्वरी देवी और बगलामुखी देवी के रूप में भी आप ही सुख की दाता हैं।

श्री भैरव तारा जग तारिणि।
छिन्न भाल भव दु:ख निवारिणि॥

श्री भैरवी और तारादेवी के रूप में आप ही जगत का उद्धार करती हैं। छिन्नमस्तादेवी के अवतार में आप ही भवसागर के दु:खों का निवारण करती हैं।

केहरि वाहन सोह भवानी।
लांगुर बीर चलत अगवानी॥

वाहन (सवारी) के रूप में केहरी (सिंह) पर शोभायमान भवानी जी! लांगुर जैसे वीर आपकी अगवानी करते हैं।

कर में खप्पर खड्ग विराजै।
जाको देख काल डर भाजै॥

आपके हाथों में जब खप्पर और खड्ग (काली के रूप में) होता है तो उसे देखकर काल भी डर कर भाग जाता है।

सोहै अस्त्र और त्रिशूला।
जाते उठत शत्रु हिय शूला॥

विभिन्न अस्त्र-शस्त्र और त्रिशूल उठाये हुए आपके रूप को देखकर शत्रु के हृदय में स्वयं ही पीड़ा उठने लगती है।

नगरकोट में तुम्हीं बिराजत।
तिहूँ लोक में डंका बाजत॥

नगरकोट कांगड़े वाली देवी के रूप में भी आप ही विराजमान हैं। इस प्रकार से तीनों लोकों में आपके नाम का डंका बज रहा है।

शुम्भ निशुम्भ दानव तुम मारे।
रक्त बीज शंखन संहारे॥

शुम्भ और निशुम्भ जैसे दानवों का वध आपने किया और रक्तबीज का भी हजारों की संख्या में विनाश किया।

महिषासुर नृप अति अभिमानी।
जेहि अघ भार मही अकुलानी॥

अत्यन्त अभिमानी राजा महिषासुर के पापों के भार से जब धरती व्याकुल हो उठी-

रूप कराल कालिका धारा।
सेन सहित तुम तिहि संहारा॥

तब काली का विकराल रूप धारण करके आपने सेना सहित उसका संहार कर दिया।

परी गाढ़ सन्तन पर जब जब।
भई सहाय मातु तुम तब तब॥

इस प्रकार से जब-जब भी संतजनों पर आपत्तियाँ पड़ीं तब-तब हे माता! आपने सहायता की है।

अमर पुरी अरु बासव लोका।
तव महिमा सब रहें अशोका॥

जब तक ये पुरियाँ और सब लोक हैं तब तक आपकी महिमा से सब शोक रहित रहेंगे।

ज्वाला में है ज्योति तुम्हारी।
तुम्हें सदा पूजें नर नारी॥

श्री ज्वालाजी में आप ही की ज्योति जल रही है। नर-नारी सदा आपकी पूजा करते हैं।

प्रेम भक्ति से जो यश गावे।
दु:ख दारिद्र निकट नहिं आवे॥

प्रेम व भक्तिपूर्वक जो भी व्यक्ति आपके यश का गायन करता है, दु:ख व दरिद्र उसके निकट नहीं आते हैं।

ध्यावे तुम्हें जो नर मन लाई।
जन्म-मरण ताकौ छुटि जाई॥

जो व्यक्ति निष्ठापूर्वक आपका ध्यान करता है उसका जन्म मरण का बन्धन निश्चित ही छूट जाता है।

जोगी सुर मुनि कहत पुकारी।
योग न हो बिन शक्ति तुम्हारी॥

योगी देवता और मुनिजन पुकार-पुकार कर कहते हैं कि आपकी शक्ति (कृपा) के बिना योग भी संभव नहीं है।

शंकर आचारज तप कीनो।
काम और क्रोध जीति सब लीनो॥

शंकराचार्य ने आचारज नामक तप किया तो काम, क्रोध इत्यादि सब को जीत लिया।

निशिदिन ध्यान धरो शंकर को।
काहु काल नहिं सुमिरो तुमको॥

उन्होंने नित्य ही शंकर भगवान् का ध्यान किया लेकिन आपका स्मरण उन्होंने किसी भी पल नहीं किया।

शक्ति रूप को मरम न पायो।
शक्ति गई तब मन पछितायो॥

आपकी शक्ति का उन्होंने मर्म (भेद) नहीं जाना तो उनकी शक्ति छिन गई और तब वह मन-ही-मन पछताने लगे।

शरणागत हुई कीर्ति बखानी।
जय जय जय जगदम्ब भवानी॥

आपकी शरण में आकर उन्होंने जब आपकी कीर्ति का बखान किया और जय जय जगदम्बा भवानी का उच्चारण किया-

भई प्रसन्न आदि जगदम्बा।
दई शक्ति नहिं कीन विलम्बा॥

तब आदि शक्ति जगदम्बा जी! आपने प्रसन्न होकर उनकी शक्ति उन्हें लौटाने में विलम्ब नहीं किया।

मोको मातु कष्ट अति घेरो।
तुम बिन कौन हरे दुःख मेरो॥

हे माता! मुझको बहुत से कष्टों ने घेर रखा है। आपके अतिरिक्त इन दुःखों को कौन हर सकेगा? अर्थात् आप ही मेरे दुःखों को दूर करें।

आशा तृष्णा निपट सतावें।
मोह मदादिक सब बिनशावें॥

आशा और तृष्णा तो निरन्तर सताती ही हैं मोह मद आदि (मोह, अहंकार, काम, क्रोध, ईर्ष्या) भी सब दुःखी करते हैं।

शत्रु नाश कीजै महारानी।
सुमिरों इकचित तुम्हें भवानी॥

हे भवानी! मैं एकचित होकर तुम्हारा स्मरण करता हूँ आप मेरे शत्रुओं का नाश कीजिये।

करो कृपा हे मातु दयाला।
ऋद्धि-सिद्धि दे करहु निहाला॥

हे दया बरसाने वाली माता! मुझ पर कृपा कीजिए और ऋद्धि-सिद्धि प्रदान करके मुझे निहाल करें।

जब लगि जिऊं दया फल पाऊँ।
तुम्हारो यश मैं सदा सुनाऊँ॥

हे माता! मैं जब तक जीवित रहूँ आपकी दया का पात्र बना रहूँ और आपकी यश की कथा सबको सुनाता रहूँ।

दुर्गा चालीसा जो कोई गावे।
सब सुख भोग परमपद पावे॥

इस प्रकार जो भी दुर्गा चालीसा गायेगा अर्थात् पाठ करेगा वह सब सुखों को भोगता हुआ परमपद को प्राप्त होगा।

देवीदास शरण निज जानी।
करहु कृपा जगदम्ब भवानी॥

'देवीदास' को अपनी शरण में जानकर हे जगदम्बा! हे भवानी! मुझ पर कृपा कीजिए।

॥ श्री दुर्गा चालीसा समाप्त॥

अथ विन्ध्येश्वरी चालीसा

नमो नमो विन्ध्येश्वरी नमो नमो जगदम्ब।
सन्त जनों के काज में करती नहीं विलम्ब॥

मैं श्री विन्ध्येश्वरी देवी को नमन करता हूँ, श्री जगदम्बा जी को नमन करता हूँ जो सन्तजनों के कार्य करने में कभी भी देरी नहीं लगाती हैं।

जय जय जय विन्ध्याचल रानी।
आदिशक्ति जग विदित भवानी॥

श्री विन्ध्याचल रानी की जय हो, जय हो, जय हो। जो आदि शक्ति हैं और भवानी के नाम से उन्हें सारा जगत जानता है।

सिंहवाहिनी जय जग माता।
जय जय जय त्रिभुवन सुखदाता॥

शेर की सवारी करने वाली जग की माता की जय हो। त्रिभुवन को सुख प्रदान करने वाली माता की जय हो-जय हो-जय हो।

कष्ट निवारिनि जय जग देवी।
जय जय जय असुरासुर सेवी॥

कष्ट का निवारण करने वाली जग की देवी की जय हो। सन्त, असुर (राक्षस) और सुर (देवता) जिसकी सेवा करते हैं ऐसी देवी माता की जय हो, जय हो, जय हो।

महिमा अमित अपार तुम्हारी।
शेष सहस मुख वर्णत हारी॥

आपकी महिमा अमिट और अपार (जिसका वर्णन न किया जा सके) है। शेषनाग भी जिसका सहस्त्रों मुखों से वर्णन नहीं कर सकते हैं या वर्णन करते हुए हार मान जाते हैं।

दीनन के दुःख हरत भवानी।
नहिं देख्यो तुम सब कोउ दानी॥

दीनजनों के दुःख को हरने वाली है भवानी! मैंने आप जैसा कोई दानी नहीं देखा।

सब कर मनसा पुरवत माता।
महिमा अमित जगत विख्याता॥

माता! आप सबकी मनवांछित इच्छाओं को पूर्ण करने वाली हैं इसीलिए आपकी अमिट महिमा जगत में विख्यात है।

जो जन ध्यान तुम्हारो लावै।
सो तुरतहि वांछित फल पावै॥

जो व्यक्ति आपका ध्यान-पूजन करता है वह तुरन्त ही वांछित (जैसी जिसकी इच्छा होती है) फल प्राप्त करता है।

तू ही वैष्णवी तू ही रुद्राणी।
तू ही शारदा अरु ब्रह्माणी॥

तुम स्वयं वैष्णवी रूप हो। तुम ही रुद्राणी (रुद्र अर्थात् शिव की पत्नी), तुम ही शारदा माता और तुम ही ब्रह्माणी हो।

रमा राधिका श्यामा काली।
तू हि मातु सन्तन प्रतिपाली॥

रमा, राधिका, श्यामा और काली ये सब रूप भी आपके हैं। हे माता! तुम ही संतों का प्रतिपालन करने वाली हो।

उमा माधवी चण्डी ज्वाला।
बेगि मोहि पर होहु दयाला॥

उमा, माधवी, चंडी और ज्वाला भी आपके नाम हैं। आप शीघ्र ही मुझ पर दया करें।

तुम ही हिंगलाज महारानी।
तुम ही शीतला अरु विज्ञानी॥

तुम ही हिंगलाज की महारानी कहलाती हो और तुम ही शीतला माता के नाम से जानी जाती हो तथा ज्ञान-विज्ञान भी तुम ही हो।

तुम ही लक्ष्मी जग सुखदाता।
दुर्गा दुर्ग विनाशिनी माता॥

तुम ही लक्ष्मी बनकर संसार को सुख का दान दे रही हो। दुःखों के दुर्ग का विनाश करने वाली दुर्गा माता भी तुम ही हो।

तुम हि जान्हवी अरु उत्रानी।
हेमावती अम्बे निर्वानी॥

तुम ही जान्हवी (गंगा) हो और तुम ही उत्राणी का

अवतार हो। निर्वाण प्रदान करने वाली अम्बा का रूप हेमावती भी तुम ही हो।

अष्टभुजी वाराहिनि देवी।
करत विष्णु शिव जाकर सेवी॥

अष्टभुजाधारी वाराहिनी देवी भी आप ही हो जिसकी विष्णु और शिव भी सेवा करते हैं।

चौसट्टी देवी कल्यानी।
गौरि मंगला सब गुण खानी॥

आप कल्याण करने वाली चौसट्टी देवी भी हो। सब गुणों की खान मंगला गौरी भी आप ही हो।

पाटन मुम्बा दन्त कुमारी।
भद्रकाली सुन विनय हमारी॥

पाटन मुम्बा और दन्त कुमारी के नामों से प्रसिद्ध होने वाली हे भद्रकाली! हमारी विनय सुनिये-

बज्रधारिणी शोक नाशिनी।
आयु रक्षिणी विन्ध्यवासिनी॥

बज्र धारण करने वाली और शोक (दुःख) का विनाश करने वाली तथा आयु की रक्षा करने वाली विनध्यवासिनी देवी।

जया और विजया वैताली।
मातु संकटी अरु विकराली॥

जया और विजया तथा वैताली, संकटी माता और विकराली।

नाम अनन्त तुम्हार भवानी।
बरनैं किमि मानुष अज्ञानी॥

इस प्रकार हे भवानी! आपके अनन्त नाम हैं। इनका बखान ये अज्ञानी मनुष्य कैसे कर सकते हैं।

जा पर कृपा मात तव होई।
तो वह करै चहै मन जोई॥

हे माता! जिस पर आपकी कृपा हो जाये वही मनचाहा कार्य कर सकता है।

कृपा करहु मो पर महारानी।
सिद्ध करिअे अम्बे मम बानी॥

हे महारानी! मुझ पर भी कृपा कीजिये और मेरी कही हुई बात को सत्य सिद्ध कीजिये।

जो नर धरे मातु कर ध्याना।
ताकर सदा होय कल्याना॥

जो मनुष्य माता का ध्यान करता है उसका सदा कल्याण होता है।

विपति ताहि सपनेहु नहिं आवै।
जो देवी को जाप करावै॥

जो देवी का जाप करवाता है, उसके स्वप्न में भी विपत्ति नहीं आ सकती है।

जो नर कहं ऋण होय अपारा।
सो नर पाठ करै शतवारा॥

जिस व्यक्ति पर अपार ऋण चढ़ गया हो। वह सौ बार इसका पाठ करे।

निश्चय ऋणमोचन होइ जाई।
जो नर पाठ करै मन लाई॥

जो मनुष्य मन लगाकर निश्चयपूर्वक इस पाठ को करेंगे वे अवश्य ही ऋण से मुक्त हो जायेगें।

अस्तुति जो नर पढ़े पढ़ावे।
जग में सो बहु सुख पावै॥

श्री विन्ध्येश्वरी देवी जी की स्तुति को जो व्यक्ति स्वयं पढ़ते हैं और दूसरों को भी पढ़ाते हैं वह इस संसार में बहुत सुख पाते हैं।

जाको व्याधि सतावै भाई।
जाप करत सब दूरि पराई॥

जिसको किसी प्रकार की कोई व्याधि (ऊपरी बाधा) सताती हो, वह इसका पाठ करे तो समस्त बाधा दूर हो जाती है।

जो नर अति बन्दी महं होई।
बार हजार पाठ कर सोई॥

जो व्यक्ति किसी प्रकार के बंधन में हो तो वह हजार बार पाठ करे।

निश्चय बन्दी ते छुटि जाई।
सत्य वचन मम मानहु भाई॥

निश्चय ही वह बन्धन मुक्त हो जायेगा। हे भाई मेरी बात सत्य करके मानिये।

जा पर जो कछु संकट होई।
निश्चय देविहिं सुमिरै सोई॥

जिस व्यक्ति पर किसी भी प्रकार का संकट हो वह निष्ठा से देवी का सुमिरन करे।

जा कहं पुत्र होय नहिं भाई।
सो नर या विधि करे उपाई॥

जिस किसी दम्पति के पुत्र न होता हो तो भाई! वह व्यक्ति इस विधि द्वारा उपाय करे।

पांच वर्ष सो पाठ करावै।
नौरातर महं विप्र जिमावै॥

पांच वर्ष तक निरन्तर प्रतिदिन पाठ करे और नवरात्रों में ब्राह्मणों को भोजन करावे।

निश्चय होय प्रसन्न भवानी।
पुत्र देहि ताकहं गुण खानी॥

इस प्रकार पाठ करने से माँ भवानी निश्चय ही देवी प्रसन्न होती हैं और गुणवान पुत्र प्राप्त करने का आशीर्वाद देती है।

ध्वजा नारियल आनि चढ़ावै।
विधि समेत पूजन करवावै॥

भक्त को पुत्र प्राप्ति होने वर वह विन्ध्यवासिनी देवी पर आकर ध्वजा और नारियल की भेंट चढ़ायें तथा विधिपूर्वक पूजन करायें।

नित प्रति पाठ करै मन लाई।
प्रेम सहित नहिं आन उपाई॥

प्रतिदिन मन लगाकर प्रेमपूर्वक पाठ करने के अलावा कोई दूसरा उपाय नहीं है।

यह श्री विन्ध्याचल चालीसा।
रंक पढ़त होवे अवनीसा॥

यह श्री विन्ध्याचल महारानी जी का चालीसा यदि रंक (निर्धन) भी पढ़े तो राजा बन सकता है।

यह जनि अचरज मानहु भाई।
कृपा दृष्टि जापर हो जाई॥

यह है तो एक प्रकार का आश्चर्य ही है लेकिन यदि किसी पर माता की कृपा दृष्टि हो जाये तो संभव भी है।

जय जय जय जगमातु भवानी।
कृपा करहु मो पर जन जानी॥

जग की माता अपना जन जानकर मुझ पर भी कृपा कीजिए। हे भवानी! आपकी जय हो, जय हो, जय हो।

॥जय माता की॥

विन्ध्येश्वरी स्तोत्र

निशुम्भ शुम्भ गर्जनीं, प्रचण्ड मुण्ड खण्डनीम्।
वने रणे प्रकाशिनीं, भजामि विन्ध्यवासिनीम्॥
त्रिशूल मुण्ड धारिणीं, धरा विघात हारिणी।
गृहे गृहे निवासिनीं, भजामि विन्ध्यवासिनीम्॥
द्ररद्रि दुःख हारिणीं, सदाविभूति कारिणीम्।
वियोग शोकहारिणीं, भजामि विन्ध्यवासिनीम्॥
लसत्सुलोललोचनं लतांसनं वरप्रदम्।
कपाल-शूल धारिणीं भजामि विन्ध्यवासिनीम्॥
करे मुदा गदाधरीं, शिवां शिवप्रदायिनीम्।
वरां वराननीं शुभां, भजामि विन्ध्यवासिनीम्॥
कपीन्द्र जामिनीप्रदां, त्रिधा स्वरूप धारिणी।
जले थले निवासिनीं, भजामि विंध्यवासिनीम्॥
विशिष्टशिष्टकारिणीं, विशालरूप धारिणीम्।
महोदरे विलासिनीं, भजामि विन्ध्यवासिनीम्॥
पुरन्दरादि सेवितां, पुरादिवंशखंडिताम्।
विशुद्ध बुद्धिकारिणीं, भजामि विंध्यवासिनीम्॥

आरती अम्बे जी की

जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।
तुमको निशिदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिवजी ॥जय अम्बे
मांग सिंदूर विराजत, टीको मृगमद को।
उज्ज्वल से दोउ नयना, चन्द्र वदन नीको ॥जय अम्बे
कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजे।
रक्त पुष्प गल माला, कण्ठन हार साजे ॥जय अम्बे
केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्पर धारी।
सुर नर मुनि जन सेवत, तिनके दुख हारी ॥जयअम्बे
कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती।
कोटिक चन्द्र दिवाकर, सम राजत ज्योति ॥जय अम्बे
शुम्भ-निशुम्भ विदारे, महिषासुर घाती।
धूम्र-विलोचन नयना, निशिदिन मदमाती ॥जय अम्बे
चण्ड-मुण्ड संहारे, शोणित बीज हरे।
मधु कैटभ दोउ मारे, सुर-भयहीन करे ॥जय अम्बे
ब्रह्माणी रुद्राणी, तुम कमला रानी।
आगम-निगम बखानी, तुम शिव पटरानी ॥जय अम्बे
चौसठ योगिनि गावत, नृत्य करत भैरों।

तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता।
भक्तन की दुख हरता, सुख सम्पत्ति करता ॥जय अम्बे
भुजा चार अति शोभित, वर-मुद्रा धारी।
मनवांछित फल पावत, सेवत नर-नारी॥जय अम्बे
कचन थाल विराजत, अगर कपूर बाती।
मालकेतु में राजत, कोटि रतन ज्योति॥जय अम्बे
माँ अम्बे जी की आरती, जो कोई नर गावे।
कहत शिवानन्द स्वामी, सुख-सम्पत्ति पावे॥जय अम्बे

आरती विन्ध्येश्वरी जी की

सुन मेरी देवी पर्वत वासिनी तेरा पार न पाया।
पान सुपारी ध्वजा नारियल ले तेरी भेंट चढ़ाया।।
सुवा चोली तेरे अंग विराजे केसर तिलक लगाया।
नंगें पग तेरे दर अकबर आया सोने का छत्र चढ़ाया।।
ऊंचे-ऊंचे पर्वत वना शिवाली नीचे शहर बसाया।
सतयुग त्रेता द्वापर मध्ये कलियुग राज सवाया।।
धूप दीप नैवेध आरती मोहन भोग लगाया।
ध्यानु भक्त मैया तेरे गुण गावें मन वांछित फल पाया।।

आरती दुर्गा जी की

अम्बे तू है जगदम्बे काली। जय दुर्गे खप्पर वाली।।
तेरे ही गुण गावें भारती।
ओ मैया हम सब उतारें तेरी आरती।।
तेरे भक्त जनों पर माता, पीर पड़ी है भारी।
दानव दल पर टूट पड़ो मां, करके सिंह सवारी।।
सौ सौ सिंहों से बलशाली, है अष्ट भुजाओं वाली,
दुष्टों को तू ही ललकारती। ओ मैया
माँ-बेटे का है इस जग में, बड़ा ही निर्मल नाता।
पूत-कपूत सुने हैं पर न, माता सुनी कुमाता।।
सब पे करूणा दर्शाने वाली, अमृत बरसाने वाली,
दुखियों के दुखड़े निवारती। ओ मैया
नहीं मांगत धन और दौलत, न चांदी न सोना।
हम तो मांगे तेरे चरणों में, छोटा सा इक कोना।।
सबकी बिगड़ी बनाने वाली, लाज बचाने वाली,
सतियों के सत को संवारती। ओ मैया
चरण शरण में खड़े तुम्हारी, ले पूजा की थाली।
वरद हस्त सर पर रख दो माँ संकट हरनेवाली।।
माँ भर दो भक्ति रस प्याली, अष्ट भुजाओं वाली,
भक्तों के कारज तू ही सारती। ओ मैया

आरती वैष्णो देवी की

दरश दिखाओ मां नव रूप धार के,
शरण मे आया मैं तो सच्चे दरबार के।।
शीश पे मुकुट सोहे गले मुण्ड माला,
कानों मे कुण्डल संग मे भैरव काला।।
चरणों मे पायल रूमझुम बोले झंकार के
शरण मे आया

शुम्भ-निशुम्भ महिषासुर मारे,
चण्ड-मुण्ड जैसे दैत्य संहारे।
दुष्टों का नाश करती नंगी तलवार से।।
शरण मे आया

पड़ी भीड़ देवो पे तो तुमको पुकारा है।
चड़ पीठ़ सिंह मैया उनको उबारा है।
पुष्प वरसाते देव स्वर्ग के द्वार से ।।
शरण मे आया

रमा राधिका अम्बे तू ही और दुर्गा काली हैं,
सेवक की मैया करती तू ही रखवाली है
दरश दिखाओ माँ नवरूप धारा के।।
शरण मे आया

आरती शाकुम्भरी देवी की

करकै सिंह की सवारी। मां शाकुम्भरी पधारी॥
बोले सारे नर नारी जै जै कार है॥
छाई हर घर में खुशियाली। आई करने भक्तों की रखवाली॥
मां ने ले लिया अवतार है बोले सारे
माता मेरी बड़ी दयालू जो धावै सो पावै।
मन इच्छा फल मां देती, जो भी शरण मे जावै॥
भक्तों को तेरा ही आधार है। बोले सारे
मेरे मन की बात भवानी। तेरे ते ना छानी॥
माफ करो मां भूलें मेरी मैं तो हूं अज्ञानी॥
मां आई होके सिंह पै सवार है। बोले सारे
जब जब धर्म की हानि होती तू लेती अवतार।
जगदम्बा, नवदुर्गा, अम्बा तू ही पालन हार॥
सत्य कहे जो आता मां तेरे दरबार है बोलें सारे.....

॥जय माता की॥

आरती पार्वती देवी की

जय पार्वती माता जय पार्वती माता।
ब्रह्म सनातन देवी शुभ फल की दाता॥ जय.....
अतिकुल पक्ष निवासी निज सेवक त्राता।
जगजीवन जगदम्बा हरि के गुण गाता॥ जय.....
सिंह वाहन साजै लुकड़ रहे साथा।
देव वधु जंह गावत नीरत करत ताथा॥ जय.....
सतयुग रूप शील अति सुन्दर नाम सती कहलाता।
हेमांचल घर जन्मी सखियन संग राता॥ जय.....
शुभ निशुम्भ विदारे हेमांचल स्याता।
सहज भुजा तनु घर के चक्र लिया हाथा॥ जय.....
सृष्टि रूप तू ही जननी सिव संग रंग राता।
नन्दी भृङ्गी बीन बजावें वही परयो मतमाता॥ जय.....
देवी अर्ज करत हम मन चित कूं लाता।
गावत दे दे ताली में रंग छाता॥ जय.....
श्री परताप आरती मैया की जो कोई नर गाता।
स्वर्ग सुखी नित रहता सुख संपति पाता॥ जय.....

आत्म निवेदन

आवाहन पूजन और विसर्जन मुझे नही करना आता है।
चंचल रहता है चित्त मेरा मन बार बार बहकाता है।।
मुझको मंत्रों यंत्रों का कुछ भी और विधि विधान का ज्ञान नहीं।
क्या करूं समर्पण चरणों मे साधन सुविधा समान नहीं।।
अपराधों का कुछ अन्त नही भूलों पर भूलें करता हूँ।
पर तुमसे क्षमा दान पाकर निर्भय निर्द्वन्द्व विचरता हूँ।।
तेरे उपकार उदार प्यार को देख हृदय भर आता है।
हो जाता पूत कपूत मगर मां रहती सदा सुमाता है।।
जैसा भी हूँ मैं तेरा हूँ शरणागत को अपना लेना।
करुणा करके मेरे सिर पर अपना कोमल कर धर देना।।
हे जगदम्बे! होकर प्रसन्न मेरी पूजा स्वीकार करो।
ज्योतिर्मय जीवन हो दिनेश तन मन मे परम प्रकाश भरो।।

॥जय माता की॥

© PRINTMAN
805500760204039